

International Multidisciplinary
Research Journal

Golden Research
Thoughts

Chief Editor
Dr.Tukaram Narayan Shinde

Publisher
Mrs.Laxmi Ashok Yakkaldevi

Associate Editor
Dr.Rajani Dalvi

Honorary
Mr.Ashok Yakkaldevi

Welcome to GRT

RNI MAHMUL/2011/38595

ISSN No.2231-5063

Golden Research Thoughts Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial board. Readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

International Advisory Board

Flávio de São Pedro Filho Federal University of Rondonia, Brazil	Mohammad Hailat Dept. of Mathematical Sciences, University of South Carolina Aiken	Hasan Baktir English Language and Literature Department, Kayseri
Kamani Perera Regional Center For Strategic Studies, Sri Lanka	Abdullah Sabbagh Engineering Studies, Sydney	Ghayoor Abbas Chotana Dept of Chemistry, Lahore University of Management Sciences[PK]
Janaki Sinnasamy Librarian, University of Malaya	Ecaterina Patrascu Spiru Haret University, Bucharest	Anna Maria Constantinovici AL. I. Cuza University, Romania
Romona Mihaila Spiru Haret University, Romania	Loredana Bosca Spiru Haret University, Romania	Ilie Pinteau, Spiru Haret University, Romania
Delia Serbescu Spiru Haret University, Bucharest, Romania	Fabricio Moraes de Almeida Federal University of Rondonia, Brazil	Xiaohua Yang PhD, USA
Anurag Misra DBS College, Kanpur	George - Calin SERITAN Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences Al. I. Cuza University, IasiMore
Titus PopPhD, Partium Christian University, Oradea,Romania		

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India	Iresh Swami Ex - VC. Solapur University, Solapur	Rajendra Shendge Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur
R. R. Patil Head Geology Department Solapur University,Solapur	N.S. Dhaygude Ex. Prin. Dayanand College, Solapur	R. R. Yalikal Director Managment Institute, Solapur
Rama Bhosale Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel	Narendra Kadu Jt. Director Higher Education, Pune	Umesh Rajderkar Head Humanities & Social Science YCMOU,Nashik
Salve R. N. Department of Sociology, Shivaji University,Kolhapur	K. M. Bhandarkar Praful Patel College of Education, Gondia	S. R. Pandya Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai
Govind P. Shinde Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai	Sonal Singh Vikram University, Ujjain	Alka Darshan Shrivastava Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar
Chakane Sanjay Dnyaneshwar Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune	G. P. Patankar S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka	Rahul Shriram Sudke Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore
Awadhesh Kumar Shirotriya Secretary,Play India Play,Meerut(U.P.)	Maj. S. Bakhtiar Choudhary Director,Hyderabad AP India.	S.KANNAN Annamalai University,TN
	S.Parvathi Devi Ph.D.-University of Allahabad	Satish Kumar Kalhotra Maulana Azad National Urdu University
	Sonal Singh, Vikram University, Ujjain	

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.aygrt.isrj.org



निम्बार्काचार्य सम्प्रदाय में जगत्

जयवीर सिंह तैन्नगुरिया

अद्वैत वेदान्त दर्शन विभाग , अ.प्र. सिंह विश्वविद्यालय, रीवा (म.प्र.)

सारांश :- निम्बार्काचार्य भास्कराचार्य के अनुयायी हैं, पर भास्कराचार्य के औपाधिक भेदाभेदवाद से थोड़ा भिन्न स्वाभाविक भेदाभेदवाद का प्रतिपादन करके इन्होंने अलग सम्प्रदाय बनाया, जो एक विशिष्ट धर्म-सम्प्रदाय के रूप में, मुख्य रूप से ब्रज तथा उत्तर प्रदेश में एवं अन्यत्र, बंगाल आदि में प्रचलित रहा है। इनका समय, दासगुप्त के मन में, चौदहवीं सदी के अन्त या पन्द्रहवीं सदी के प्रारम्भ का है। रोमा चौधरी इन्हें ग्यारहवीं सदी का मानती है जो अधिक उपयुक्त प्रतीत होता है। कुछ परम्परानुयायी इनका समय काफी पीछे ले जाते हैं, किन्तु रामानुजाचार्य के बाद ही इन्हें मानना उचित होगा।

मुख्य शब्द – निम्बार्काचार्य सम्प्रदाय एवं जगत्।

प्रस्तावना

निम्बार्काचार्य उसी प्रकार वस्तुवादी या ब्रह्मार्थसत्यवादी तथा ज्ञान, ज्ञाता, ज्ञेय एवं ज्ञान के साधन (प्रमाणत्रय) को स्वीकार करते हैं जिस प्रकार रामानुजाचार्य। ज्ञान यथार्थ, वस्तु-विषयक तथा आत्मा का धर्मभूत द्रव्य है। यथार्थ ज्ञान या प्रमा बुद्धि-वृत्ति के नहीं जीव के आश्रित होती है। प्रमा या धर्मभूत ज्ञान में संकोच-विकास कर्मवश होता है, इसलिए कि आत्मा के स्वरूप-ज्ञान के समान यह स्वयंप्रकाश नहीं है। आत्मा सदा ही ज्ञातृत्व धर्मवाला होता है, अतः ज्ञान का कभी अभाव नहीं होता। इन्द्रिय आदि निमित्त न मिलने से सुषुप्ति, मूर्च्छा आदि दशा में वह प्रकट नहीं हो पाता। यदि उसका अभाव माना जाय तो कभी भी आविर्भाव सम्भव नहीं होगा। यथा – “अस्य ज्ञानस्य सुषुप्त्यादौ सत एव जाग्रदादौ अभिव्यक्तिसंभवात् यावदात्मभावित्वमेव, यथा पुंस्त्वादेः बाल्ये सत एव यौवनेऽभिव्यक्तिः।”¹

विश्लेषण –

निम्बार्काचार्य का जगत् विषयक मत यह है कि यह जगत् पूरा-पूरा ब्रह्म है, किन्तु ब्रह्म पूरा-पूरा जगत् नहीं है। वह विभु एवं परात्पर रहते हुए जगत् में अन्तर्यामी है। कारण व्यापक होता है और कार्य की आपूर्ति करता है, कार्य सीमित, व्यक्त और कारण की अपेक्षा कम परिणाम वाला होता है। कारण-निरवयव और कार्य-सावयव आदि भेद भी दोनों में होते ही हैं। चूँकि कार्य की उपलब्धि कारण के रहने पर होती है अतः अनन्यत्व है। यथा – “तदनन्यत्वं कारण सद्भावे कार्योपलब्धेः।”²

निम्बार्काचार्य की मान्यता है कि जगत् रूप कार्य ब्रह्म से भिन्न होते हुए भी उत्पत्ति से पूर्व ब्रह्म में सत होता है, उत्पन्न होने पर भी वह सत् ही रहता है, असत् या मिथ्या नहीं हो जाता। निम्बार्काचार्य रामानुजाचार्य के समान ज्ञान को महत्वपूर्ण मानते हैं। वस्तुतः ज्ञानात्मक भक्ति मानने का कारण यह है कि सभी वेदान्ती वैदिक ज्ञानकाण्ड के समर्थक हैं। तथापि कर्म आदि को भी महत्व देकर ज्ञान कर्म-समुच्चयवाद को मान्यता भक्ति सम्प्रदाय के इन वैष्णव आचार्यों की विशेषता रही है। अविद्या या कर्म की निवृत्ति एवं आत्मा और ब्रह्म का स्वरूप-ज्ञान मोक्ष है। श्रुति में भी ज्ञान का महत्व बताया गया है तथा उपासना द्वारा भोग की इच्छा और भोग-साधन को त्याग कर ईश्वर के स्वरूप और गुणों का ध्यान करने से ज्ञान का लाभ होना कहा है। इस ज्ञान या विद्या का तात्पर्य ब्रह्मज्ञान है, क्योंकि श्रुतियों में ब्रह्म ही परमतत्त्व माना गया है। ज्ञान का विषय बद्ध जीव नहीं, अपितु मुक्त जीव हो सकता है। वस्तुतः परमात्मा ही आत्मरूप से ध्येय या ज्ञेय है। यथा – “मुमुक्षुणा परमपुरुषः स्वस्य आत्मत्वेन ध्येयः।”³

निम्बार्काचार्य की धारणाओं में जगत् की सृष्टि प्राकृत तत्त्व के रूप में हुयी है। प्राकृत तत्त्व माया-प्रधान, त्रिगुणात्मिक

प्रकृति, तमस्, अजा, अव्यक्त आदि नामों से ज्ञात अचेतन प्रकृति है। यह सांख्य की प्रकृति से इस बात में भिन्न है कि सत्व, रजस् और तमस् द्रव्य—रूप नहीं, अपितु इसके आश्रित गुण या धर्म हैं और यह ब्रह्मात्मिका अर्थात् स्वतंत्र नहीं, ब्रह्म के अधीन तत्त्व है। यथा — “मन्त्रोक्ताऽजा ब्रह्मात्मिकाऽस्तु। औपनिषदं प्रधानं परकारणाधीनत्वादर्थवदानर्थक्यं पराभिमतस्य तस्येति भेदः।”⁴

निम्बार्काचार्य का जगत् विषयक मत रामानुज के अचित तत्त्व के समान है। ईश्वर की इच्छा से इसमें विक्षेप एवं साम्यावस्था का भंग होकर गुण—वैषम्य होता है। गुणों की विषमता से कार्योन्मुख प्रकृति महत्त्व को व्यक्त करती है।

पृथ्वी गन्ध तन्मात्रा के द्वारा जल में, जल रस तन्मात्रा के द्वारा तेज में, तेज रूप तन्मात्रा के द्वारा वायु में, वायु स्पर्श तन्मात्रा के द्वारा आकाश में, आकाश शब्द तन्मात्रा में लीन होकर तामस अहंकार में, इन्द्रियाँ राजस अहंकार में, मन आदि वैकारिक अहंकार में, तीनों अहंकार महत् में, महत् अव्यक्त में, वह भी पुरुष—पुरुष में और पुरुष भी ब्रह्म में लीन होता है। तीसरा अचेतन तत्त्व है काल, जो नित्य और विभु है। सब प्राकृत अचेतन तत्त्व काल के अधीन होते हैं। स्वरूपतः काल अखण्ड एवं नित्य है।

प्रकृति और विकार, धर्मी और धर्म, कारण और कार्य भिन्नाभिन्न हैं, उनमें न तो सर्वथा भेद है और न अभेद। इस प्रकार निम्बार्काचार्य सत्कार्यवाद और परिणामवाद का सहारा लेकर जगत्—रूप कार्य का ब्रह्म कारण से भेदाभेद सम्बन्ध स्थापित करते हैं। अप्रच्युत स्वरूप वाला निरवयव ब्रह्म यदि जगत् के रूप में परिणमित होता है तो जगत्, जो विलक्षण अचेतन स्वभाववाला है, ब्रह्म ही कहा जायगा और यह कि ब्रह्म में जीवों के प्रति वैषम्य—नैर्धृण्य दोष भी आ जायगा।

निष्कर्ष —

इस प्रकार प्रकृति और ईश्वर के संयोग का एक बहुत बड़ा प्रयोजन जगत् सृष्टि का भी है। निम्बार्काचार्य का मत है कि जगत् का उपादान कारण प्रकृति है। प्रकृति और ईश्वर का लौह—चुम्बक जैसा सम्बन्ध है। जैसे चुम्बक के समीप रखे हुए जड़ लोहे में गति या क्रिया पैदा हो जाती है वैसे ही ईश्वर के सान्निध्य से प्रकृति में क्रियाशीलता उत्पन्न हो जाती है। इस दृष्टि से ईश्वर की सत्ता प्रकृति की सत्ता से भी ऊँची है। वह ईश्वर पूर्णकाम, नित्य और जीवों में अन्तर्यामी होकर उनके कार्यों का साक्षी बना रहता है।

संदर्भ —

1. वेदान्त पारिजात सौरभ — 2 / 3 / 30, निम्बार्काचार्य.
2. वेदान्त पारिजात सौरभ — 2 / 1 / 15, निम्बार्काचार्य.
3. वेदान्त पारिजात सौरभ — 4 / 1 / 3, निम्बार्काचार्य.
4. वेदान्त पारिजात सौरभ — 14 / 3, निम्बार्काचार्य.

Publish Research Article

International Level Multidisciplinary Research Journal For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper, Summary of Research Project, Theses, Books and Book Review for publication, you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed, India

- ★ International Scientific Journal Consortium
- ★ OPEN J-GATE

Associated and Indexed, USA

- EBSCO
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Database
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database
- Directory Of Research Journal Indexing

Golden Research Thoughts
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005, Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.aygrt.isrj.org